ज्ञान शांति मैत्री

बुधवार 8 मई 2019

मीडिया समय

जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों का प्रायोगिक अखबार

छायावाद शताब्दी समारोह आज से

दीपक बाजिया

वर्धा।

'वह तोड़ती पत्थर;
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर–
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय–कर्म–रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार–बार प्रहार:–
सामने तरु–मालिका अट्टालिका, प्राकार।'

दो महायुद्धों के बीच लिखी इन पंक्तियों में मानवीय श्रम की भावनाओं की दैहिक भाषा को शब्दों में पिरोने वाले महाप्राण सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, महादेवी वर्मा हो या जयशंकर प्रसाद सभी ने ऐसे समय में भावनाओं को नए प्रतिमान दिए जब साहित्य नीरस व स्थूल हो जाने का आरोप झेल रहा था। नए प्रतिमान गढ़ने के इस साहित्य के दौर को 'छायावाद' का नाम दिया गया। दो महायुद्धों के बीच लिखी गई कविता के कालखंड 'छायावाद' के सौ वर्ष पूरे होने पर देशभर में कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे है। इसकी महत्वपूर्ण कड़ी में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। 8 व 9 मई 2019 को गालिब सभागार में आयोजित इस संगोष्ठी की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ल करेंगे। इस संगोष्ठी में देशभर से साहित्यकार व शोधार्थी हिस्सा ले रहे हैं। इस मौके पर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक, शोधार्थी आदि शामिल होंगे। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में जयशंकर प्रसाद व सुमित्रानंदन पंत के काव्य पर व्याख्यान होंगे। द्वितीय सत्र में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एवं महादेवी वर्मा के काव्य पर चर्चा होगी। तृतीय सत्र में छायावाद के विविध आयामों को समग्र मूल्यांकन के दृष्टिकोण से व्याख्यान होंगे।

संगोष्ठी के संयोजक प्रो. अवधेश कुमार, सह संयोजक प्रो. अखिलेश कुमार दुबे, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह और साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर ने बताया कि इस संगोष्ठी का उद्देश्य है– छायावाद के सौ वर्ष पूरे होने पर छायावाद के मनीषियों का पुनः स्मरण करना, छायावाद की प्रवृत्तियों का समसामयिक संदर्भों में विश्लेषण करना, छायावाद के प्रकृति प्रेम को पर्यावरणीय संदर्भों में देखना, राष्ट्रीय चेतना, मानवतावादी दृष्टिकोण, सभ्यता विमर्श को परखना और छायावाद की भाषा एवं शिल्प पर विचार करना है। इसके साथ ही छायावाद के आलोचकों– मुकुटधर पांडेय, शांतिप्रिय द्विवेदी, नंद दुलारे बाजपेयी, नामवर सिंह आदि की आलोचना दृष्टि पर भी आज के संदर्भ और समय में विचार करना है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में दो महायुद्धों के बीच का समय छायावाद का युग कहा जाता है। यह स्वच्छंदतावाद की नकल पर चला आंदोलन नही है, बल्कि यह आधुनिक हिंदी साहित्य के इतिहास की महत्वपूर्ण परिणति है। यह स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है। छायावाद भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और सांस्कृतिक नवजागरण की गोद में जन्मी मानव मुक्ति की कविता है जिसमें देश भक्ति और राष्ट्रीयता की भावना का स्थाई निवास है। छायावाद उस राष्ट्रीय और सांस्कृतिक जागरण की अभिव्यक्ति है जो पुरानी रूढ़ियों को अस्वीकार करती है और मानव मुक्ति के सपने देखती है। प्रसाद ने हिमालय के प्रति कविता में प्रलय में पले हुए हम वीर कहकर जनता को नया संदेश दिया। निराला ने जागो फिर एक बार कविता में सांस्कृतिक परंपरा के तार झनझना दिए। निराला की कविता तुलसीदास तो स्वाधीनता का स्वर्ण कलश है।

मुकुटधर पांडेय ने किया 'छायावाद' का नामकरण

हिंदी आलोचना में छायावाद का प्रचलन 1920 में हुआ। जबलपुर से छपनेवाली पत्रिका श्रीशारदा के जुलाई, सितंबर, नवंबर और दि. संबर 1920 के अंकों में मुकुटधर पांडेय ने हिंदी में छायावाद शीर्षक से चार किस्तों में लेख लिखा। पांडेय जी ने छायावाद को मिस्टिसिज्म के लिए आया हुआ कहा तो छायावाद को मि. स्टिसिज्म या रहस्यवाद से सम्बद्ध माना गया। फिर छायावादी कवियों पर अंग्रेजी के रोमांटिक कवियों का प्रभाव देखकर उसे रोमांटिसिज्म का प्रतिरूप समझा गया। छायावाद को चित्रभाषावाद या अभिव्यंजना की नूतन पद्धति भी समझा गया। वैसे में भ्रांति निवारण के लिए जयशंकर प्रसाद ने छाया की व्याख्या करते हुए कहा–मोती के भीतर छाया की जैसी तरलता। प्रसाद ने छाया का अर्थ कांति, पानी, चमक, आब बताते हुए कहा कि छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर निर्भर करती है। यानी छायावाद प्रकृति काव्य नहीं, शक्ति काव्य है। इस शक्ति काव्य पर भारतीय सांस्कृतिक नवजागरण का प्रभाव कई स्तरों पर है। छायावाद के युग की प्रतिनिधि रचना कामायनी और राम की शक्ति पूजा है। मूलसंदेश यह है कि शक्ति के नियोजन से पराधीनता से मुक्ति मिल सकती है। बनारस की रंग संस्था रूपवाणी व्योमेश शुक्ल के निर्देशन में राम की शक्ति पूजा का मंचन करती है और शक्ति की करो मौलिक कल्पना का संदेश देते हुए यह दर्शाती है कि शक्ति की मौलिक कल्पना औरों की नकल से नहीं, मौलिक सूझ से ही की जा सकती है।

निराला की रचना राम की शक्ति पूजा के मंचन की तरह व्योमेश शुक्ल कामायनी का भी मंचन करते हैं। प्रसाद की रचना कामायनी में हर बार आता है कि अपने में सब कुछ भर कैसे व्यक्ति विकास करेगा। जयशंकर प्रसाद ने इसे 'वेदना के आधार पर स्वानुभ. ूतिमयी अभिव्यक्ति' माना तो सुमित्रानंदन पंत इसे पश्चिमी साहित्य के रोमांटिसिज्म का प्रभाव। महादेवी वर्मा 'प्रकृति के साथ रागात्मक संबंध द्वारा हृदय में व्यापक भावानुभूति उत्पन्न करने की रहस्यात्मक प्रवृत्ति को छायावाद का दूसरा चरण मानती हैं।

हजारी प्रसाद द्विवेदै 'हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास' मे लिखते है कि "द्वितीय सन् 1929 मे महात्मा गाधी के नेतृत्व मे भारतवर्ष विदेशी गुलामी को झाड़–फेंकने के लिए कटिबद्ध हो गया। इसे सिर्फ राजनीति तक ही सीमित नहीं समझना चाहिये। यह संपूर्ण देश का आत्म स्वरूप समझने का प्रयत्न था और अपनी गलतियों को सुधार कर संसार की समृद्ध जातियों की प्रति– द्वंद्विता मे अग्रसर हो ने का संकल्प था। संक्षेप मे, यह एक महान सास्कृतिक आंदोलन था। नामवर सिंह मानते है कि 'छायावाद उस राष्ट्रीय जागरण की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जो एक ओर पुरानी रूढ़ियों से मुक्ति चाहता था और दूसरी ओर विदेशी पराधीनता से।"

कुलपति करेंगे अध्यक्षता

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो रजनीश कुमार शुक्ल इस राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता करेंगे। प्रो शुक्ल ने बीते माह कुलपति का कार्यभार ग्रहण किया है। इससे पूर्व वह भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सदस्य सचिव थे। उनके पास भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव का अतिरिक्त प्रभार भी था। प्रो शुक्ल संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी में तुलनात्मक दर्शन और धर्म के प्रा. फेसर हैं। वे वहां 1991 से ही अध्यापन कर रहे हैं। प्रोफेसर शुक्ल तीन बार विभागाध्यक्ष रहे। वे दर्शनशास्त्र संकाय के अधिष्ठाता भी रहे। उन्होंने वहां कुलसचिव, कार्यपरिषद के सदस्य, कॉलेज विकास परिषद के निदेशक और अन्य कई पदों पर अपनी सेवाएं दी हैं। प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ल राष्ट्रपति द्वारा काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कोर्ट के नामांकित सदस्य भी रहे हैं। वे इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के वाराणसी क्षेत्र की सलाहकार समिति के सदस्य भी रहे हैं। प्रो० शुक्ल सिक्किम के प्रथम राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना समिति के सदस्य एवं आचार्य अभिनव गुप्त सहस्त्राब्दी समारोह समिति के सचिव हैं। वर्तमान मे अखिल भारतीय दर्शन के कार्यकारी अध्यक्ष भी हैं। प्रो० शुक्ल महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी से स्नातक एवं स्नातकोत्तर एवं बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र मे पीएचडी की उपाधि प्राप्त की है। आपके सात पुस्तकें, सौ से ज्यादा शोधपत्र–शोध आलेख प्रकाशित हैं।

नौ सदस्यीय आयोजन समिति करेगी व्यवस्था

वर्धा। आयोजन समिति दो दिवसीय संगोष्ठी के लिए गठित की गई आयोजन समिति के संरक्षक कुलपति प्रो रजनीश कुमार शुक्ल हैं। साहित्य विद्यापीठ की अधिष्ठाता प्रो प्रीति सागर व हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष प्रो कृष्ण कुमार सिंह मार्गदर्शक हैं। प्रो अवधेश कुमार संयोजक व प्रो अखिलेश कुमार दुबे सह संयोजक हैं। आयोजन समिति में डॉ रामानुज अस्थाना, डॉ अशोक नाथ त्रिपाठी, डॉ उमेश कुमार सिंह, डॉ वीरपाल सिंह यादव, डॉ रूपेश कुमार सिंह शामिल हैं। आयोजन में विभाग के शोधार्थी–विद्यार्थियों का भी महत्वपूर्ण सहयोग है।

कार्यक्रम विवरण

08 मई 2019 बुधवार

उद्घाटन सत्र

छायावाद के सौ वर्ष

(11:00 से 01:30 बजे तक)

भोजन अंतराल

(01:30 से 02::30 बजे तक)

प्रथम सत्र

जयशंकर प्रसाद एवं सुमित्रानंदन पंत का काव्य (समय 02:30 से 05:30 बजे तक)

द्वितीय सत्र

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' एवं महादेवी वर्मा का काव्य (10:30 से 01:30 बजे तक)

भोजन अंतराल

(01:30 से 02::30 बजे तक)

तृतीय सत्र

छायावाद : विविध आयाम, समग्र मूल्यांकन

(समय 02:30 से 05:30 बजे तक)

छायावाद के चार स्तंभ

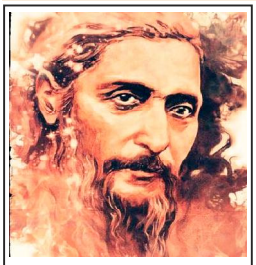

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(21 फरवरी, 1896 –15 अक्टूबर, 1961)

हिन्दी साहित्य के प्रख्यात कवि छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों मे से एक माने जाते हैं। उन्होंने कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं परन्तु उनकी ख्याति एक छायावादी कवि के रूप मे बनती है साहित्य रचना में इनका पदार्पण इनकी रचना "जन्मभूमि की वदना" से आरम्भ होती है ये निरंतर "मर्यादा" और "सरस्वती" पत्रिका का अध्ययन करते थे, इनकी सर्वाधिक लोकप्रिय रचना "जूही की कली" रही छायावादी कवियो मे इनका अनोखा स्थान है। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की काव्यकला की सबसे बड़ी विशेषता है चित्रण–कौशल। वह मानवीय भावनाओं का चित्र उकेरने में सिद्धहस्त थे। आत्. रिक भाव हो या बाह्य जगत के दृश्य–रूप, संगीतात्मक ध्वनिया हो या रंग और गंध, सजीव चरित्र हो या प्राकृतिक दृश्य, सभी अलग–अलग लगने वाले तत्त्वों को घुला–मिलाकर निराला ऐसा जीवंत चित्र उपस्थित करते हैं कि पढ़ने वाला उन चित्रों के माध्यम से ही निराला के मर्म तक पहुँच सकता है।

महादेवी वर्मा

(26 मार्च 1907–11 सितंबर 1987)

महादेवी वर्मा हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती" भी कहा है। महादेवी वर्मा रहस्यवाद और छायावाद की कवयित्री थी, अतः उनके काव्य में आत्मा– परमात्मा के मिलन विरह तथा प्रकृति के व्यापारों की छाया स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है। वेदना और पीड़ा महादेवी जी की कविता के प्राण रहे हैं। वे स्वयं लिखती हैं, दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जिसमें सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की क्षमता है। इनकी कविताओं में सीमा के बंधन में पड़ी असीम चेतना का क्रंदन है। यह वेदना लौकिक वेदना से भिन्न आध्यात्मिक जगत की है। उन्हें 'सेकसरिया' एवं 'मंगला प्रसाद' पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। साहित्य साधना के लिए भारत सरकार ने पद्म भूषण की उपाधि से अलंकृत किया।

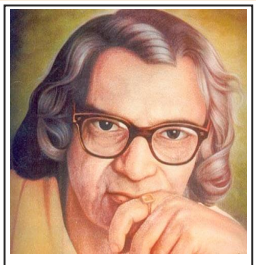

सुमित्रानंदन पंत

(20 मई 1900–28 सितंबर 1977)

छायावाद युग के प्रमुख कवियों मे से एक सुमित्रानंदन पंत सात साल की उम्र से ही कविता लेखन शुरू कर दिया था। उनका जन्म अल्मोड़ा के कसौनी मे हुआ था और उनकी दादी ने उनका पालन पोषण किया था। सुमित्रानंदन पंत ने प्रभावी रूप से प्रकृति चित्रण किया है। उनकी कविताओं में झरना, बर्फ, पुष्प, लता, भंवरा गुंजन, उषा किरण, शीतल पवन, तारों की चुनरी ओढ़े गगन से उतरती संध्या आदि का चित्रण बड़े ही सहज रूप से दिखाई देता है। उन्होंने कविता, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि विधाओं में काम किया। उच्छवास, पल्लव, वीणा, ग्रंथि, गुंजन, ग्राम्या, युगांत, युगांतर, स्वर्णकिरण, स्वर्णधूलि, कला और बूढ़ा चांद, लोकायतन, सत्यकाम, मुक्तियज्ञ, तारापथ, मानसी, युगवाणी, उत्तरा, रजतशिखर, शिल्पी, सौवर्ण, अतिमा, पतझड़, आदि प्रसिद्ध रचनाएं हैं। इन्हें पद्ममभूषण, ज्ञानपीठ, साहित्य अकादमी, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

जयशंकर प्रसाद

(30 जनवरी 1889–14 जनवरी 1937)

छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हिन्दी कवि, नाटककार, कहानीकार, उपन्यासकार तथा निबन्धकार थे। उन्होंने हिंदी काव्य में एक तरह से छायावाद की स्थापना की जिसके द्वारा खड़ी बोली के काव्य में न केवल कमनीय माधुर्य की रससिद्ध धारा प्रवाहित हुई, बल्कि जीवन के सूक्ष्म एवं व्यापक आयामों के चित्रण की शक्ति भी संचित हुई और कामायनी तक पहुँचकर वह काव्य प्रेरक शक्तिकाव्य के रूप में भी प्रतिष्ठित हो गया। उन्होंने 48 वर्षों के छोटे से जीवन में कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास और आलोचनात्मक निबंध आदि विभिन्न विधाओं में रचनाएं लिखी। उनके द्वारा लिखी गई 'कामायनी' छायावादी युग का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य माना जाता है। इसके साथ ही झरना, आँसू, लहर, प्रेम पथिक, चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी आदि अन्य प्रसिद्ध रचनाएं हैं। इसे छायावाद का 'उपनिषद' भी कहा जाता है। उनकी अंतिम काव्य रचना 1938 ई. में प्रकाशित हुई।